E.P.C -II सत्र 19-21 दिनांक 01/05/2020

16 Monday FEBRUARY

ख्याल :-

यह फारसी भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है कल्पना। गीत के इस प्रकार में कल्पना का विशेष महत्व होने के कारण ही शायद इसे ख्याल की संज्ञा दी गई है।

हम ख्याल की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं, गीत का वह प्रकार जिसमें राग के नियमों की रक्षा करते हुये आलाप, तान, बोल-तान, खटका, मुर्की, सरगम आदि विभिन्न अलंकारों द्वारा तबले के साथ गायक अपनी भावनाओं को जब अभिव्यक्त करता है तो उसे ख्याल कहते हैं। ख्याल में स्वरों की स्थिरता और चपलता दोनों पर विशेष बल दिया जाता है और गमक का प्रयोग कम होता है। कुछ संगीतज्ञ ख्याल में भी गमक अधिक प्रयोग करते हैं। इसका प्रयोग ध्रुपद-धमार गायकों की छाया है। ख्याल में ध्रुपद के समान लयकारी पर जोर नहीं दिया जाता, बल्कि स्वर-चमत्कार व स्वर सौन्दर्य पर विशेष बल दिया जाता है। अतः ख्याल में स्वर की तुलना में लय और ख्याल का स्थान गौड़ होता है। इसमें शृंगार रस की प्रधानता होती है। ख्याल के दो प्रकार होते हैं। विलम्बित अथवा बड़ा ख्याल तथा द्रुत या छोटा ख्याल।

यह विलम्बित लय में गाया जाता है, शायद इसीलिए इसे विलम्बित अथवा बड़ा ख्याल कहा जाता है। इसके साथ तबले का प्रयोग होता है। अतः एक ताल, तिलवाड़ा, झूमरा, झपताल, आड़ा चार ताल आदि तबले के

08 ताल इसके साथ बजाये जाते हैं, बड़े ख्याल में शब्द बहुत थोड़े होते हैं और गीत के केवल दो भाग होते हैं- स्थाई और अंतरा। मुख्यतः अधिकतर 2 से 4 मात्राओं तक होता है। कुछ संगीतज्ञ बड़े ख्याल के पूर्व विस्तार में आलाप करते हैं, किंतु कुछ इसका विरोध करते हैं। इसके समर्थन में वे यह प्रमाण देते हैं कि ख्याल प्रारम्भ करने के पूर्व विस्तार में आलाप करने से ख्याल के बीच विस्तार अथवा बढ़त करने की गुंजाइश नहीं रहती और ऐसा करने से ख्याल के पूर्व किये गये आलाप की पुनरावृत्ति होगी इस कथन में सत्यांश अवश्य दिखाई पड़ता है। इसलिए आज के अधिकांश गायक ख्याल के पूर्व बहुत कम आलाप करते हैं। संगीतज्ञों का एक ऐसा वर्ग भी है जो बड़े ख्याल के पूर्व नोम-तोम का आलाप विस्तार में करते हैं। हम सभी जानते हैं कि नोम-तोम का आलाप ध्रुपद-धमार में किया जाता है।